Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Article

भारतीय ज्ञान परंपरा की माध्यमिक स्तरीय पाठ्यक्रम में प्रासंगिकता

ताराचंद पंवार [1*], डॉ. गिरधारी लाल शर्मा [2]

[1] शोधकर्ता, शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं, राजस्थान, भारत

[2] सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं, राजस्थान, भारत

Corresponding Author: *ताराचंद पंवार

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.19283972

सारांश

राष्ट्रिय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) भारतीय शिक्षा प्रणाली को समग्र, बहुआयामी और मूल्य-आधारित बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। इस नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) को शिक्षा के सभी स्तरों पर समाविष्ट करने पर विशेष बल दिया गया है। भारतीय ज्ञान परंपरा केवल ऐतिहासिक धरोहर नहीं, बल्कि जीवन, समाज, प्रकृति और ब्रह्मांड के प्रति एक समन्वित एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान करने वाली सशक्त बौद्धिक विरासत है।

वर्तमान समय में जब माध्यमिक शिक्षा अत्यधिक प्रतिस्पर्धी, परीक्षा–केन्द्रित तथा कौशल–आधारित स्वरूप धारण कर चुकी है, तब NEP 2020 के आलोक में भारतीय ज्ञान परंपरा का माध्यमिक स्तरीय पाठ्यक्रम में समावेश विद्यार्थियों के समग्र विकास (Holistic Development), आलोचनात्मक चिंतन, नैतिक बोध तथा सांस्कृतिक आत्मगौरव के लिए अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है।

यह शोध पत्र NEP 2020 के उद्देश्यों के संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा की अवधारणा, उसके दार्शनिक एवं ऐतिहासिक आधार, माध्यमिक शिक्षा में उसकी आवश्यकता, पाठ्यक्रमीय एकीकरण की रणनीतियाँ, संभावित चुनौतियाँ तथा उनके समाधान का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि भारतीय ज्ञान परंपरा अतीत की विरासत मात्र नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की शिक्षा को दिशा देने वाला एक सुदृढ़ शैक्षिक आधार है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 20-01-2026
- **Accepted:** 25-02-2026
- **Published:** 28-03-2026
- **MRR:**4(3); 2026: 357-360
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

ताराचंद पंवार, डॉ. गिरधारी लाल शर्मा. भारतीय ज्ञान परंपरा की माध्यमिक स्तरीय पाठ्यक्रम में प्रासंगिकता. इंडियन जर्नल ऑफ मॉडर्न रिसर्च रिव्यू. 2026;4(3):357-360.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मुख्य शब्द: राष्ट्रिय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020), भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS), माध्यमिक शिक्षा, पाठ्यक्रम एकीकरण

प्रस्तावना

भारत विश्व की प्राचीनतम ज्ञान-संस्कृतियों में से एक रहा है। यहाँ की ज्ञान परंपरा ने दर्शन, गणित, खगोलशास्त्र, आयुर्वेद, साहित्य, कला, स्थापत्य और सामाजिक चिंतन जैसे विविध क्षेत्रों में अमूल्य योगदान दिया है। प्राचीन काल में नालंदा विश्वविद्यालय और तक्षशिला विश्वविद्यालय जैसे शिक्षाकेंद्रों ने वैश्विक स्तर पर ज्ञान-विनिमय की परंपरा को समृद्ध किया। शिक्षा को केवल सूचना-प्रदान की प्रक्रिया नहीं, बल्कि जीवन-निर्माण का माध्यम माना गया।

NEP 2020 इसी परंपरा को आधुनिक संदर्भ में पुनर्स्थापित करने का प्रयास करती है। नीति में स्पष्ट रूप से उल्लेख है कि शिक्षा को भारतीय मूल्यों, परंपराओं और सांस्कृतिक बोध से जोड़ते हुए वैश्विक दक्षताओं से समन्वित किया जाना चाहिए।

माध्यमिक शिक्षा (कक्षा 9–10 अथवा 9–12) किशोरावस्था का वह संवेदनशील चरण है, जहाँ विद्यार्थियों का बौद्धिक, भावनात्मक और नैतिक विकास तीव्र गति से होता है। वे अपनी पहचान, सामाजिक

© 2026 ताराचंद पंवार, डॉ. गिरधारी लाल शर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

भूमिका तथा जीवन के उद्देश्य के प्रति सजग होते हैं। यदि इस अवस्था में उन्हें अपनी सांस्कृतिक जड़ों, दार्शनिक आधारों और वैज्ञानिक परंपरा का बोध नहीं कराया जाता, तो शिक्षा अधूरी रह जाती है।
वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में ज्ञान को प्रायः रोजगार, परीक्षा और अंकों तक सीमित कर दिया गया है। परिणामस्वरूप विद्यार्थी शिक्षा को जीवन से पृथक मानने लगते हैं। NEP 2020 के अनुरूप भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश इस असंतुलन को दूर कर सकता है, क्योंकि यह ज्ञान को जीवन-दर्शन, नैतिकता, आत्म-विकास और सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ती है।
इस प्रकार, NEP 2020 के परिप्रेक्ष्य में माध्यमिक स्तरीय पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता न केवल सांस्कृतिक पुनर्जागरण का प्रश्न है, बल्कि यह एक संतुलित, मूल्य-सम्पन्न और आत्मनिर्भर राष्ट्र के निर्माण की दिशा में भी एक आवश्यक शैक्षिक कदम है।

भारतीय ज्ञान परंपरा: अवधारणा और स्वरूप

भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge Tradition) एक बहुआयामी और समन्वित ज्ञान प्रणाली है। यह केवल धार्मिक ग्रंथों तक सीमित नहीं है, बल्कि अनुभव, तर्क, अनुसंधान और जीवन–मूल्यों का समग्र समन्वय है।

(क) दार्शनिक आधार

भारतीय दर्शन के प्रमुख छह दर्शनों—न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदांत—ने ज्ञान के स्रोत (प्रमाण), तर्क पद्धति और सत्य की खोज की विधि को व्यवस्थित रूप दिया। न्याय दर्शन ने तर्क और प्रमाण पर बल दिया, जबकि सांख्य ने प्रकृति और पुरुष के सिद्धांत को स्पष्ट किया। योग दर्शन ने मानसिक अनुशासन और आत्म–नियंत्रण की विधियाँ विकसित कीं। इन दार्शनिक पद्धतियों से विद्यार्थियों में आलोचनात्मक सोच, विश्लेषण और तार्किक निष्कर्ष निकालने की क्षमता विकसित की जा सकती है।

(ख) वेद, उपनिषद और शास्त्र

वेद और उपनिषद् जीवन के मूल प्रश्नों—'मैं कौन हूँ?', 'जीवन का उद्देश्य क्या है ?'—का उत्तर खोजते हैं। इनमें धर्म, कर्म, मोक्ष, आत्मा और ब्रह्म जैसे सिद्धांतों की चर्चा है। यह चिंतन किशोरों में आत्म–विश्लेषण और जीवन के प्रति गहन दृष्टिकोण विकसित करता है।

(ग) वैज्ञानिक योगदान

भारतीय गणितज्ञों ने शून्य और दशमलव प्रणाली का विकास किया। खगोलशास्त्र में ग्रहों की गति और पंचांग की रचना, आयुर्वेद में शरीर–स्वास्थ्य का समग्र दृष्टिकोण, धातु विज्ञान में उच्च गुणवत्ता की धातु निर्माण तकनीक—ये सभी भारतीय वैज्ञानिक दृष्टि के उदाहरण हैं।

(घ) साहित्य और कला

संस्कृत, तमिल, पाली और प्राकृत भाषाओं का साहित्य नैतिक, सामाजिक और सौंदर्यात्मक दृष्टि से समृद्ध है। नाट्यशास्त्र, काव्यशास्त्र और संगीतशास्त्र जैसी विधाओं ने कला को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया।

माध्यमिक स्तर की शिक्षा का परिचय

माध्यमिक स्तरीय शिक्षा भारतीय शिक्षा प्रणाली का वह चरण है जिसमें विद्यार्थी लगभग 14–16 वर्ष की आयु में होते हैं। यह शिक्षा स्तर बच्चों के मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और बौद्धिक विकास के लिए अत्यंत निर्णायक होता है। वर्तमान पाठ्यक्रम में विषयगत विभाजन, परीक्षा आधारित शिक्षा, तथा योग्यता–प्रतियोगिता पर आधारित संरचना का प्रभाव अधिक होता है।
लेकिन इनका परिणाम यह होता है कि विद्यार्थी ज्ञान को मात्र तथ्यात्मक रूप में ग्रहण करते हैं और उसके मूलभूत व्यावहारिक, सांस्कृतिक और जीवन–मूल्यों से प्रेरणादायक आयामों को समझने में असमर्थ रहते हैं। ऐसे में भारतीय ज्ञान परंपरा न केवल विषयगत बुद्धिमत्ता को बढ़ा सकती है, बल्कि विद्यार्थियों में विश्लेषण, नैतिकता और आत्म–साक्षात्कार का विकास कर सकती है।

माध्यमिक पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान परंपरा के समावेश की आवश्यकता

1. **सांस्कृतिक आत्म–पहचान और सम्मान**- माध्यमिक स्तर पर भारतीय ज्ञान परंपरा के अध्ययन से विद्यार्थियों को अपनी सांस्कृतिक धरोहर से जुड़ने का अवसर मिलता है। उपनिषद्, वेद और अन्य पारंपरिक ग्रंथों के माध्यम से वे अपनी बौद्धिक विरासत को समझते हैं। इससे उनमें आत्मगौरव, सामाजिक सम्मान तथा सुदृढ़ आत्म–परिचय का विकास होता है।

2. विश्लेषणात्मक तथा तर्क–आधारित सोच का विकास - भारतीय दर्शन और तर्कशास्त्र प्रमाण, अनुमान और उपमान जैसे सिद्धांतों पर आधारित हैं। गौतम द्वारा प्रतिपादित न्याय दर्शन तार्किक चिंतन को प्रोत्साहित करता है। इन सिद्धांतों के अध्ययन से विद्यार्थी समस्याओं का वैज्ञानिक एवं तार्किक विश्लेषण करना सीखते हैं, जिससे उनकी आलोचनात्मक सोच विकसित होती है।

3. जीवन–मूल्य और नैतिकता - भारतीय ज्ञान परंपरा में अहिंसा, सत्य, करुणा, सहिष्णुता और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों पर विशेष बल दिया गया है। महात्मा गांधी ने अहिंसा और सत्य के सिद्धांतों को व्यवहार में उतारकर इन मूल्यों की प्रासंगिकता सिद्ध की। इन आदर्शों का समावेश किशोरों को नैतिक रूप से सुदृढ़ और जिम्मेदार नागरिक बनने में सहायता करता है।

4. ज्ञान की समन्वित एवं समग्र दृष्टि - भारतीय परंपरा ज्ञान को विभाजित न करके समग्र रूप में देखती है। आयुर्वेद शरीर, मन और आत्मा को एक इकाई मानता है। इसी प्रकार गणित, विज्ञान, साहित्य, कला और दर्शन के बीच अंतर्संबंध स्थापित कर शिक्षा को एकीकृत और व्यापक दृष्टिकोण प्रदान किया जा सकता है।

5. वैश्विक शिक्षा में भारतीय ज्ञान का योगदान - आज विश्व स्तर पर योग, आयुर्वेद और ध्यान जैसी परंपरागत प्रणालियों को स्वीकार किया जा रहा है। इनका अध्ययन विद्यार्थियों को वैश्विक संदर्भ में प्रतिस्पर्धी और सक्षम बनाता है।

© 2026 ताराचंद पंवार, डॉ. गिरधारी लाल शर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

निष्कर्षत

माध्यमिक पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की मूल भावना के अनुरूप है, जो शिक्षा को भारतीयता से जोड़ते हुए वैश्विक दृष्टि प्रदान करती है। NEP 2020 अनुभवात्मक, समग्र और बहुआयामी शिक्षा पर बल देती है, जिसमें ज्ञान के पारंपरिक और आधुनिक स्रोतों का संतुलित समन्वय आवश्यक माना गया है। भारतीय ज्ञान परंपरा विद्यार्थियों में आत्मगौरव, नैतिक मूल्यों और आलोचनात्मक चिंतन का विकास करती है। यह शिक्षा को केवल सूचना-आधारित न रखकर जीवनोपयोगी और मूल्यपरक बनाती है। साथ ही, यह स्थानीय से वैश्विक स्तर तक ज्ञान के आदान-प्रदान को सुदृढ़ करती है। माध्यमिक स्तर पर इसका समावेश विद्यार्थियों को जड़ों से जोड़ते हुए उन्हें नवाचार, अनुसंधान और जिम्मेदार नागरिकता की दिशा में प्रेरित करेगा। इस प्रकार, भारतीय ज्ञान परंपरा और NEP 2020 का समन्वय भविष्य की संतुलित, समावेशी और आत्मनिर्भर शिक्षा व्यवस्था की आधारशिला सिद्ध हो सकता है।

माध्यमिक पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता

(1) सांस्कृतिक आत्म–बोध का विकास- भारतीय ज्ञान परंपरा विद्यार्थियों को अपनी सांस्कृतिक पहचान से जोड़ती है। जब विद्यार्थी अपने देश की बौद्धिक उपलब्धियों को समझते हैं, तो उनमें आत्मगौरव और राष्ट्रीय चेतना का विकास होता है। इससे वे हीनभावना से मुक्त होकर वैश्विक मंच पर आत्मविश्वास के साथ खड़े हो सकते हैं।

(2) नैतिक और चारित्रिक निर्माण - अहिंसा, सत्य, करुणा, सहिष्णुता और कर्तव्य–पालन जैसे मूल्य भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल तत्व हैं। इन मूल्यों का समावेश विद्यार्थियों को जिम्मेदार नागरिक बनाता है। किशोरावस्था में नैतिक दुविधाएँ सामान्य होती हैं; ऐसे में जीवन–मूल्यों का अध्ययन उन्हें सही निर्णय लेने में सहायता करता है।

(3) आलोचनात्मक और विश्लेषणात्मक सोच - भारतीय तर्कशास्त्र प्रमाण, अनुमान और उपमान जैसे साधनों पर आधारित है। यदि इन सिद्धांतों को सरल रूप में माध्यमिक स्तर पर पढ़ाया जाए, तो विद्यार्थी तार्किक निष्कर्ष निकालना सीखेंगे। इससे विज्ञान और गणित की समझ भी सुदृढ़ होगी।

(4) समग्र दृष्टिकोण का विकास - भारतीय ज्ञान परंपरा ज्ञान को विभाजित नहीं करती, बल्कि उसे एकीकृत रूप में देखती है। उदाहरण के लिए, आयुर्वेद शरीर, मन और आत्मा को एक इकाई के रूप में देखता है। यह दृष्टिकोण विद्यार्थियों को समग्र सोच विकसित करने में सहायता करता है।

(5) मानसिक स्वास्थ्य और संतुलन - योग और ध्यान जैसी विधियाँ विद्यार्थियों के तनाव को कम करने, एकाग्रता बढ़ाने और मानसिक संतुलन बनाए रखने में सहायक हैं। परीक्षा–दबाव और प्रतिस्पर्धा के इस युग में यह अत्यंत प्रासंगिक है।

(6) जीवन कौशल विकास - भारतीय ज्ञान परंपरा विद्यार्थियों को आत्मसम्भाव, मनोवैज्ञानिक संतुलन, ध्यान–धारणा, आत्म–अनुशासन जैसे जीवन कौशलों के विकास में सहायक है।

(7) विविधता में एकता का अनुभव - भारतीय ज्ञान परंपरा में अलग-अलग सांस्कृतिक दृष्टिकोणों, भाषाओं और विचारों का समावेश मिलता है। इससे विद्यार्थी सामाजिक विविधता को समझता है और उसमें एकता की भावना विकसित होती है।

(8)शिक्षा का मानवीयकरण - ज्ञान केवल प्रतिस्पर्धा और करियर–निर्माण तक सीमित नहीं रहता; बल्कि शिक्षा का लक्ष्य जीवन को अर्थपूर्ण बनाना और मानवीय मूल्यों को पहचानना बन जाता है।

निष्कर्षतः, माध्यमिक पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की मूल भावना के अनुरूप है। NEP 2020 शिक्षा को भारतीय मूल्यों और परंपराओं से जोड़ते हुए उसे समग्र, बहुआयामी और अनुभवात्मक बनाने पर बल देती है। भारतीय ज्ञान परंपरा विद्यार्थियों में सांस्कृतिक आत्मबोध, नैतिक सुदृढ़ता और राष्ट्रीय चेतना का विकास करती है। साथ ही, तर्कशास्त्र और समन्वित दृष्टिकोण के माध्यम से उनकी आलोचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक क्षमता को प्रोत्साहित करती है। योग, ध्यान और जीवन–कौशल आधारित शिक्षण मानसिक स्वास्थ्य तथा आत्म–अनुशासन को सुदृढ़ बनाते हैं, जो NEP 2020 के समग्र विकास के लक्ष्य से मेल खाते हैं। यह शिक्षा को केवल अंकों और प्रतिस्पर्धा तक सीमित न रखकर जीवनोपयोगी और मानवीय बनाती है। अतः भारतीय ज्ञान परंपरा और NEP 2020 का समन्वय विद्यार्थियों को जड़ों से जोड़ते हुए उन्हें वैश्विक स्तर पर सक्षम, आत्मविश्वासी और जिम्मेदार नागरिक बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान परंपरा के समावेश की रणनीतियाँ

विषय–एकीकरण - भारतीय ज्ञान परंपरा को अलग से पढ़ाने के बजाय विभिन्न विषयों में समाहित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए : गणित में भारतीय गणितज्ञों (जैसे आर्यभट्ट, भवभूति) का योगदान, विज्ञान में आयुर्वेद, खगोलशास्त्र और पर्यावरण ज्ञान ; भाषा एवं साहित्य में उपनिषद्, महाकाव्य और क्षेत्रीय साहित्यिक कृतियाँ इससे विद्यार्थियों में विषयों के बीच समन्वय और सांस्कृतिक ज्ञान की गहन समझ विकसित होती है।

परियोजना–आधारित शिक्षण - विद्यार्थियों को शोध परियोजनाएँ, समूह चर्चा, केस स्टडी और प्रस्तुतीकरण के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा का अध्ययन कराना। उदाहरण: स्थानीय पारंपरिक विज्ञान या कृषि पद्धतियों पर प्रोजेक्ट । इससे अनुसंधान कौशल, सहयोग और आलोचनात्मक सोच का विकास होगा।

गतिविधि–आधारित शिक्षण - सह–पाठ्यक्रम गतिविधियों के रूप में योग, ध्यान, नाटक, शास्त्रीय संगीत, लोककला, हस्तशिल्प और सांस्कृतिक उत्सवों को शामिल किया जा सकता है। इससे विद्यार्थी अनुभवात्मक ज्ञान और आत्म-अनुशासन सीखते हैं।

© 2026 ताराचंद पंवार, डॉ. गिरधारी लाल शर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

शिक्षक प्रशिक्षण - शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भारतीय ज्ञान परंपरा की मूल अवधारणाएँ, उनकी ऐतिहासिक और दार्शनिक पृष्ठभूमि तथा आधुनिक संदर्भ में उनका शिक्षण शामिल होना चाहिए। प्रशिक्षित शिक्षक ही इस विषय को सृजनात्मक और प्रभावी ढंग से पढ़ा सकते हैं।

डिजिटल संसाधनों का उपयोग - ई–पुस्तकें, ऑडियो–विजुअल सामग्री, ऑनलाइन पाठ्यक्रम और वर्चुअल संग्रहालय आदि का प्रयोग करके पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक तकनीकी माध्यम से विद्यार्थियों तक पहुँचाया जा सकता है। इससे शिक्षा आकर्षक, संवादात्मक और समकालीन बनती है।

स्थानीय भाषाओं और सांस्कृतिक ज्ञान का समावेश - विद्यालयों में स्थानीय भाषा, लोककला, क्षेत्रीय ज्ञान प्रणालियों और परंपरागत विज्ञान का अध्ययन बढ़ावा दिया जाना चाहिए। इससे विद्यार्थियों में सांस्कृतिक आत्मगौरव और स्थानीय ज्ञान के प्रति संवेदनशीलता विकसित होती है।

उपरोक्त रणनीतियों के माध्यम से पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश शिक्षा को अधिक समग्र, जीवनोपयोगी और मूल्यपरक बना सकता है। विषय–एकीकरण, परियोजना–आधारित एवं गतिविधि–आधारित शिक्षण से विद्यार्थियों में ज्ञान के साथ अनुभव और कौशल का संतुलित विकास संभव है। शिक्षक प्रशिक्षण और डिजिटल संसाधनों का उपयोग इस प्रक्रिया को प्रभावी और समकालीन बनाता है। स्थानीय भाषाओं और सांस्कृतिक ज्ञान का समावेश विद्यार्थियों में आत्मगौरव तथा जड़ों से जुड़ाव की भावना विकसित करता है।

National Education Policy 2020 (NEP 2020) भी भारतीय ज्ञान प्रणाली, मातृभाषा आधारित शिक्षा, बहुविषयक दृष्टिकोण और कौशल विकास पर विशेष बल देती है। यह नीति शिक्षा को केवल सूचना–प्रदान तक सीमित न रखकर उसे मूल्य–आधारित, अनुभवात्मक और अनुसंधान–उन्मुख बनाने की दिशा में कार्य करती है। अतः भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश NEP 2020 के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक सिद्ध होगा। इससे विद्यार्थी वैश्विक दृष्टि के साथ भारतीय सांस्कृतिक विरासत को समझते हुए आत्मनिर्भर, रचनात्मक और जिम्मेदार नागरिक बन सकेंगे।

संदर्भ सूची

1. अल्तेकर एएस. *प्राचीन भारत में शिक्षा.* वाराणसी: नंद किशोर एंड ब्रदर्स; 2010.
2. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी). *भारतीय ज्ञान प्रणाली पर स्थिति–पत्र.* नई दिल्ली: एनसीईआरटी; 2022.
3. नन्दी आशिष. *भारतीय सभ्यता और आधुनिकता* (हिंदी संस्करण). नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस; 2003.
4. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी). *भारतीय ज्ञान परंपरा पाठ्यक्रम रूपरेखा.* नई दिल्ली: यूजीसी; 2021.
5. मिश्र लक्ष्मीनारायण. *प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति.* दिल्ली: भारतीय विद्या प्रकाशन; 2012.
6. शर्मा आरए. *शिक्षा का दर्शन और समाजशास्त्र.* मेरठ: आर. लाल बुक डिपो; 2015.
7. शर्मा चंद्रधर. *भारतीय दर्शन: एक समीक्षात्मक अध्ययन.* दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास; 2011.
8. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020.* नई दिल्ली: भारत सरकार; 2020. उपलब्ध: https://www.education.gov.in
9. REDVET. उपलब्ध: https://veterinaria.org/index.php/REDVET/article/view/108
10. Science Publishing Group. उपलब्ध: https://www.sciencepublishinggroup.com/article/10.11648/j.ijetl.20250303.11
11. IJEDR. उपलब्ध: https://rjwave.org/ijedr/papers/IJEDR2504717.pdf

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–NonCommercial–NoDerivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

About the author

ताराचंद पंवार शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं (राजस्थान) में शोधकर्ता हैं। उनका शोध क्षेत्र भारतीय शिक्षा प्रणाली, मूल्यपरक शिक्षा और ज्ञान परंपरा पर केंद्रित है। वे शैक्षिक अनुसंधान में सक्रिय हैं और शिक्षण एवं समाजोन्मुखी दृष्टिकोण को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

डॉ. गिरधारी लाल शर्मा जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं (राजस्थान) के शिक्षा विभाग में सहायक आचार्य हैं। वे शिक्षा दर्शन, शिक्षक प्रशिक्षण और भारतीय ज्ञान परंपरा के विशेषज्ञ हैं। उनका अकादमिक योगदान शिक्षण, शोध और विद्यार्थियों के समग्र विकास को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण है।

© 2026 ताराचंद पंवार, डॉ. गिरधारी लाल शर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/